जॉन रॉल्स का न्याय सिद्धान्त

जॉन रॉल्स बीसवीं सदी के महानतम नैतिक विचारक थे। जॉन रॉल्स समसामयिक उदारवादियों में काफी महत्वपूर्ण माने जाते हैं। रॉल्स की सर्वाधिक महत्वपूर्ण कृति का नाम 'A Theory of Justice', (1971) जिसका प्रकाशन संयुक्त राज्य अमेरिका में हुआ। जॉन रॉल्स ने 'A Theory of Justice' का प्रकाशन करके राजनीतिक चिन्तन के पुनरोदय के द्वार खोल दिये। इस पुस्तक के कारण रॉल्स को राजनीतिक चिन्तन के इतिहास में वही स्थान प्राप्त है जो प्लेटो, एक्विनास, काण्ट, कार्ल मार्क्स तथा मैकियावली को प्राप्त है।

रॉल्स की रचना में न्याय के अमूर्त और दार्शनिक सिद्धान्त को ऐसे रूप में उभारा गया है, जिसके अन्तर्गत अधिकारों तथा आय और सम्पत्ति के वितरण के क्षेत्र में नीति-निर्माण के लिये स्पष्ट व ठोस प्रस्ताव प्रस्तुत किये गये।

रॉल्स ने अनुबन्धमूलक समाज-दर्शन का अनुसरण अपने न्याय नियमों का पता लगाने के लिये किया है। इसके अन्तर्गत उसने यह कल्पना की है कि यदि व्यक्तियों को उनकी वर्तमान सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों से अलग कर दिया जाये और समाज में प्रचलित भेदभाव के ज्ञान से भी अलग हटा दिया जाये तो वे भावी समाज में अपने हितों की अधिकतम वृद्धि के लिये सामाजिक जीवन के नियमों, सिद्धान्तों का पुनर्निर्माण कैसे करेंगे। इस कल्पनायुक्त अवस्था को रॉल्स के द्वारा 'मूलस्थिति' (Original Position) का नाम दिया गया है। रॉल्स कहता है कि ऐसी मूल स्थिति में व्यक्तियों द्वारा परस्पर स्थायी सहमति से जो नियम स्वीकार होगा, उन्हें विश्वव्यापी आधार पर न्याय के नियम माना जा सकता है।

रॉल्स ने मूल स्थिति में जिस मनुष्य की कल्पना की, वह अहंवादी तो नहीं पर उसमें स्वार्थ परायणता जरूर है।

उसकी स्वार्थ परायणता पर सामयिक नैतिकता का दबाव होता है। व्यक्ति 'मूल स्थिति' में अज्ञान की अवस्था में रहता है। वह हानि से बचना चाहता है और सबसे आसान रास्ता चुनना चाहता है।

न्याय के मूल सिद्धान्त (Principles of Justice)

मूल अवस्था की व्याख्या के साथ जॉन रॉल्स का कहना है कि इस अवस्था में लोगों के सामने न्याय के तीन सिद्धान्त आते हैं, जिनमें व्यक्ति लाभ और आसानी से ध्यान में रखते हुये अपनाता है। दूसरे शब्दों में व्यक्ति अपने फायदेमन्द न्याय के मूल सिद्धान्त के विकल्प के रूप में किसी-ना-किसी को अपनाता है। रॉल्स के अनुसार न्याय के तीन मूल सिद्धान्त निम्न लिखित हैं

1- समान स्वतन्त्रता का सिद्धान्त (Principles of Equal Liberty)

2- भेदमूलक सिद्धान्त (Difference Principle)

3- अवसर की उचित समानता का सिद्धान्त (Principles of Fair ~~Equ~~ Equality of opportunity)

अपने न्याय सिद्धान्त के अन्तर्गत रॉल्स ने उपयोगितावाद के कई रूपों का विरोध किया है। रॉल्स का तर्क है कि उपयोगितावाद का उद्देश्य कुल उपयोगिता का अधिकतम वृद्धि (Maximization of Total Utility) है चाहे उसके वितरण में विभेद या विषमता क्यों नहीं रही हो। इस प्रकार की व्यवस्था में व्यक्ति को लाभ प्राप्त होगा ही, ऐसा नहीं कहा जा सकता। 'अधिकतम लोगों का अधिकतम सुख' में सभी के हित की गारण्टी नहीं है। इसमें ऐसा भी हो सकता है कि समाज के कुछ लोगों

Scanned with CamScanner

को दास बनाकर अधिकतम लोगों की सेवा में लगा दिया जाये, ऐसी स्थिति में भला कौन दास बनने का जोखिम उठाना चाहेगा। अतः इस व्यवस्था को अस्वीकार कर दिया जायेगा।

रॉल्स की न्याय व्यवस्था के अनुसार सुखी लोगों के सुख को चाहे कितना भी क्यों ना बढ़ा दे, उससे दुखी लोगों के दुख का हिसाब बराबर नहीं किया जा सकता। रॉल्स के न्याय सिद्धान्त की निम्न लिखित विशेषताएं हैं।

1- न्याय समाज का प्रथम सद्गुण है।
2- उत्तम समाज के लिये न्याय आवश्यक है।
3- रॉल्स के न्याय में प्रक्रियात्मक न्याय की प्रधानता है। इसमें योग्यता के अनुसार आवंटन (Allocation according to merit) या आवश्यकता के अनुसार आवंटन (Allocation according to need) जैसे विवाद का स्थान नहीं है।
4- रॉल्स के न्याय में प्रतिस्पर्धात्मक बाजार अर्थव्यवस्था (Competitive Market Economy) तथा आधारभूत सामाजिक न्यूनतम (Basic Social Minimum) व्यवस्था होगी।
5- रॉल्स का न्याय सामाजिक न्याय से सरोकार रहता है।
6- रॉल्स का न्याय लोक कल्याणकारी राज्य के सिद्धान्त को स्वीकार करता है।

उनकी रचना 'A Theory of Justice' ने उदारवाद को नयी दिशा व चेतना प्रदान की है। इस पुस्तक में 'सामाजिक न्याय' की संकल्पना विकसित करके रॉल्स ने एक आदर्श राजनीतिक व्यवस्था के

Scanned with CamScanner

निर्माण का मार्ग तैयार किया है। इसी कारण डेनियल बैल ने रॉल्स को समाजवादी नैतिकता का विचारक तथा उसके चिन्तन को समाजवादी नैतिकता का उदारवादी चिन्तन माना है। रॉल्स का दर्शन समाजवादियों के लिये समाजवादी तथा व्यक्तिवादियों के लिये व्यक्तिवादी है। रॉल्स की 'सामाजिक न्याय' की संकल्पना रॉल्स को समाजवाद के तथा व्यक्ति की गरिमा की बात उसे व्यक्तिवादी विचारक साबित करने में सक्षम है। उपयोगितावाद का विरोधी तथा सामाजिक न्याय के सरोकार रखने के कारण रॉल्स का सामाजिक न्याय का सिद्धान्त आज राजनीतिक चिन्तन का महत्वपूर्ण सिद्धान्त और सामाजिक न्याय की संकल्पना राजनीतिक चिन्तन की केन्द्रीय अवधारणा है।

समुदायवादियों ने रॉल्स के न्याय सिद्धान्त की आलोचना की है। इन लोगों का कहना कि रॉल्स वास्तविक न्याय सिद्धान्त का प्रतिपादन नहीं करता, बल्कि नैतिक तटस्थता (Ethical Neutrality) की बात करता है।

Scanned with CamScanner